10

असाज़्प्रदायिक मसीहियत: व्याज़्या अनावश्यक है

पतरस के संदेश में पापों की क्षमा पाने ''के लिए'' बपतिस्मा लेने का ऐलान (प्रेरितों 2:38) उतना ही सुनिश्चित और स्पष्ट है, जितना अंग्रेज़ी के शज़्द ''unto'' और ''into'' हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि पतरस के सुनने वालों की विशाल भीड़ में हर कोई समझता था कि वह मन फिराने और बपतिस्मे की शर्तों पर पापों से उद्धार की बात बता रहा था। उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जिसे उसकी बात समझ न आई हो। पतरस के लिए *eis* शज़्द का अर्थ ''के कारण'' या ''के चिह्न में'' होने का अर्थ इसे एक नया अर्थ देना था, जो यूनानी भाषा में इससे पहले कभी नहीं दिया गया था। पतरस के सुनने वालों की उस विशाल भीड़ में न केवल हर कोई उसके स्पष्ट संदेश को समझता था बल्कि सदियों तक यरूशलेम की इस असाज़्प्रदायिक प्रार्थना सभा के बाद, भाषा के किसी छात्र ने, मुझे नहीं लगता कि यह समझने में गलती की हो कि पतरस उन प्रश्न पूछने वालों को क्षमा पाने के लिए कौन सी दो शर्तें बता रहा था। हम इस दावे को मानने का जोखिम उठा सकते हैं कि सदियों तक, भाषा का हर सिखाने वाला यही सिखाता था।

यह तथ्य कि भाषा को वर्षों तक एक ही अर्थ दिया गया था इस व्याज़्या के सही होने का ठोस प्रमाण है। ऐसा ही होना इसके सही होने को समर्थन विशेष रूप से इस तथ्य से मिलता है कि यह व्याज़्या आज के बेहतरीन विद्वानों की व्याज़्या से मेल खाती है। ...

हो सकता है कि कोई किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य होने और बाइबल की इस शिक्षा को मानकर इसे सिखाता न हो। परन्तु ज़्या ऐसा हो सकता है कि कोई केवल मसीही हो अर्थात किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के बाहर रहकर मसीही हो जैसे पतरस था और उस बात पर विश्वास करके उसे सिखाता न हो जो बाइबल कहती है ?

हम यरूशलेम की इस प्रार्थना सभा में किए गए काम को मानते हैं ज़्योंकि हमारा प्रभु ऐसा चाहता है कि उसके अनुयायी उन्हीं सच्चाइयों को बताएं और यह कि वे मन और चिज़ में एक दूसरे के साथ पूरी तरह एक हों। यरूशलेम में होने वाली बातों के विषय में फूट होने का कोई तर्कसंगत कारण नहीं है। यदि हम में इन बातों पर आपस में फूट पड़ती तो इसके लिए हमारे पास कोई बहाना नहीं है, और इससे यही पता चलता है कि हम प्रभु के प्रति कभी वफ़ादार नहीं हैं। हम विशेष रूप से आत्मा की प्रेरणा से प्रेरितों द्वारा की गई इस प्रथम

प्रार्थना सभा में सिखाए गए बपतिस्मे के उद्देश्य को मानते हैं, ज़्योंकि सच्चे, निष्कपट मन लोगों ने यहां पर रास्ते में ''कांटा'' रख दिया है और अलग हो गए हैं। यहां हमारे बंटने का कारण बाइबल के अनुसार नहीं है, बल्कि शायद फूट का बहाना कुछ स्पष्ट दिखाई देता है।

सच्चे मन के लोग इस बात को मानते हैं कि पापियों को यीशु के बारे में सिखाया जाना चाहिए और उन्हें दिखाया जाना चाहिए कि मनुष्य का उद्धारकर्ज़ा वही है, वही उनके लिए मरा और मुर्दों में से जी उठा और उसे अब राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु का मुकुट पहनाया गया है। ये सच्चे मन के लोग इस बात से भी सहमत हैं कि क्रूस पर चढ़े और जी उठे प्रभु का यह ज्ञान उन लोगों तक जिन्हें उद्धार नहीं मिला है इस प्रकार पहुंचाया जाना चाहिए कि वे अपने पापों को मानकर अपने खोए होने की स्थिति को समझें। वफ़ादार लोग यह भी मानते हैं कि यह विश्वास करने वाले, तथा अपने पाप को मानने वाले सभी लोग मन फिराएं अर्थात अपनी पिछली जीवन शैली को छोड़कर पापों से मुड़ें और मन में पूर्ण उद्देश्य के साथ यीशु को प्रभु मानकर उसके पीछे चलें और बपतिस्मा लेने की ईश्वरीय आज्ञा को मानें। यह भी माना जाता है कि उद्धार न पाने वाले लोगों का यह विश्वास ईश्वरीय शोक से मिलकर उन्हें मन फिराव की ओर ले जाता है जिससे वे उद्धार के लिए यीशु पर भरोसा करना सीखते हैं। मन फिराव को ''निश्चित रूप से'' यह जानने का परिणाम माना जाता है कि यीशु ही प्रभु और मसीह है। ईश्वरीय शोक और मसीह के ज्ञान से पैदा हुए मन फिराव को परमेश्वर, हमारे पिता और प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा रखने की स्थिति माना जाता है। तरसुस के शाऊल की तरह इस प्रकार ''त्यागा हुआ'' मनुष्य कहता है, ''हे प्रभु मैं ज़्या करूं?'' (प्रेरितों 22:10)। यह ''त्यागा हुआ,'' पश्चाज़ापी, टूटा हुआ व्यज़्ति सचमुच परिवर्तित मनुष्य है जो प्रभु की हर इच्छा को पूरा करने को तैयार है।

और ज़्या कहें? ज़्या सच्चे मन वाले, यीशु के वफ़ादार लोग जो इस बात पर सहमत हैं, बपतिस्मे के विषय में दलों में बंट जाएंगे? वे कैसे बंट सकते हैं जबकि यीशु उनसे अपने बीच किसी प्रकार की फूट न होने की बिनती करता है? ऐसे लोगों को जिनका वर्णन ऊपर किया गया है, पतरस ने कहा था ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ...'' (प्रेरितों 2:38ख)। हनन्याह ने शाऊल से, जब वह ''त्यागा हुआ'' था, और उसने पूरी तरह से अपने आपको प्रभु के सामने समर्पित कर दिया था, कहा था ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16ख)। ज़्या किसी दूसरे ''त्यागे हुए'' व्यज़्ति, अर्थात ऐसे व्यज़्ति को जो विश्वास, ईश्वरीय शोक और मन फिराव के कारण परमेश्वर और मसीह में भरोसा करने लगा है हम वही कहने को तैयार हैं जैसे परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लोग थे?

ज़्या आपको डर लगता है कि कहीं आपकी पार्टी के लोग आपको छोड़ न दें? ज़्या आप पवित्र लोगों की संगति से प्रेम करने से बढ़कर अपनी पार्टी से प्रेम करते हैं? ज़्या आप यीशु को प्रसन्न करने से अधिक अपनी पार्टी से जुड़े रहना चाहते हैं? मैं पश्चाज़ापी, टूटे हुए समर्पित मन वाले व्यज़्ति को बपतिस्मे में उसके कर्ज़व्य को पूरा करने से सज़्बन्धित पवित्र आत्मा के वही शज़्द बताने को तैयार हूं। मैं इस बात का जोखिम उठाने को तैयार हूं

कि वह इसे समझ जाए। ज़्योंकि जहां तक हमें पता है, सदियों तक कभी किसी ने इससे अलग बात नहीं मानी।

ज़्या आप किसी ऐसी शिक्षा को मानते हैं जो सरल शज़्दों की जटिल व्याज़्या पर आधारित है ? आज फूट का एकमात्र बहाना साज़्प्रदायिक कलीसियाओं के प्रति लोगों की निष्ठा है। साज़्प्रदायिक कलीसियाओं में रहकर मसीही लोग कभी एक नहीं हो सकते, यीशु कभी प्रसन्न नहीं हो सकता और उसकी प्रार्थना का उज़र कभी नहीं मिल सकता। हमारे सामने दो ही मार्ग हैं जिनमें से हमें एक को चुनना आवश्यक है। ''आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे'' (यहोशू 24:15ख)। वफ़ादार मन वाले लोगों को साज़्प्रदायिक कलीसियाओं को छोड़ना होगा। एक मसीही अर्थात केवल मसीही बनने के लिए न इससे अधिक और न इससे कम चुनना ही हमारे सामने सबसे बड़ा अवसर है।

मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा

''शमौन पतरस ने उज़र दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उसको उज़र दिया, कि हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है ! ज़्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं, तू पतरस है। और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मज़ी 16:16-18)।